ता ऊपर औरंगजेब, ए कलियुग के नाम ।
आगे अवतार होयगा, बुद्ध कलंकी इस ठाम ॥२७॥

हे उमा ! बीसवां बादशाह औरंगजेब (शाहजहां का पुत्र) जब राज करेगा, उसके राजकाल में बुद्ध निष्कलंक का जो अवतार होगा, उसमें ही पारब्रह्म की शक्ति प्रगट होगी और इसलिए उसको बुद्ध निष्कलंक कहा है क्योंकि वह अपने साथ परा शक्ति अर्थात् जाग्रत बुद्ध का ज्ञान लेकर आएंगे । जिसके बिना आज दिन तक सारी दुनियां उस पारब्रह्म का वर्णन करने में असमर्थ थी । वो जाग्रत बुध के ज्ञान को लाने वाला अवतार होगा इसलिए वह बुद्ध निष्कलंक अवतार होगा ।

श्री महामति कहे ऐ साथ जी, सास्त्र कहें यों कर ।
आगे अपनी बीतक, सो लीजे चित धर ॥२८॥

अब बड़े मत के धनी स्वयं इन शास्त्रों के प्रमाण से अपनी पहचान करा रहे हैं कि अब वही अट्ठाईसवां कलियुग और औरंगजेब का राज्य है और मैं वही बुद्ध निष्कलंक अवतार व पारब्रह्म का स्वरूप हूं । ऐ मेरे सुन्दरसाथ जी ! ये तो शास्त्रों से पहचान हुई कि मैं ही पारब्रह्म हूं और अब आगे मेरी और आपकी वो बातें है जो परमधाम में हुई थी । अब उन बातों को सुन कर हृदय में विचार करो ।

प्रकरण १, चौपाई २८

महाकारण

अब कहों फेर के, मूल मिलावे की बीतक ।
जैसी आज्ञा धनी की, सो बातें बुजरक ॥१॥

ऐ मेरे परमधाम की आत्माओं, मेरे प्यारे सुन्दर साथ जी ! अब मैं आपको फिर दोबारा उस परमधाम में खिलवत खाने मूल मिलावे में बैठ कर, जो बातें की थी कि हमारा ही इश्क बड़ा है और हमें आपकी साहेबी भी देखनी है ऐसे वार्तालाप के पश्चात् जो अद्‌भुत और कहनी से परे की बातें हैं, जो किसी ने आज दिन तक न कही हैं न सुनी हैं वह सारी बातें तुम्हें उस परमधाम की सुना कर तुम्हें तुम्हारी हकीकत, तुम्हारे धनी व परमधाम की पहचान कराता हूं ।

पहले मूल अद्वैत में, भोम जहाँ इस्क ।
तहां प्रेम रबद में, भया हुकम हक ॥२॥

सर्वप्रथम उस मूल अद्वैत भूमि, जहां अखंड परमधाम में पारब्रह्म की स्वलीला अद्वैत होती है अर्थात् जहां इश्क ही इश्क की भूमि है व इश्क का ही व्यवहार है और वहां इश्क के वार्तालाप में ही हमको मिथ्या माया के दिखाने का, हमारे धनी का कैसे हुकम हुआ और हम कैसे यहां आए उसका वर्णन सुनाता हूं।

Nijanand App

एह खेल देखन की, इच्छा उपजाई दोय ।
अक्षर और सैयन को, आदि अनादि फल कह्यो सोय ॥३॥

वह पारब्रह्म जो हमारे धाम के धनी हैं जिनको शास्त्रों में शब्दातीत, अक्षरातीत, सच्चिदानंद कहा है। उस अखण्ड परमधाम में अपनी स्वलीला अद्वैत के लिए अपने ही आनन्द की लीला का स्वरूप, श्यामा महारानी व सखियां लीला के लिए अपने तन हैं जिनसे वह आनन्द की लीला करते हैं व सारा परमधाम, वहां का हर स्वरूप जिमी, आसमान, कण कण सब नूर ही नूर से भरपूर और आनन्द व इश्कमयी है। इस कारण से उनका सत अंग जिनको अक्षर ब्रह्म कहा है, वह उनके अपने सत अंग का ही स्वरूप है पर जहां आनन्द इश्क की लीला होती है वहां सत अंग प्रवेश नहीं कर सकते व जहां सत अंग की लीला होती है वहां आनन्द के अंग नहीं जा सकते इसलिए एक ही परमधाम में रहते हुए उनके सत अंग अक्षर ब्रह्म अपने धनी के आनंद अंग की लीला को नहीं जानते थे और आनंद अंग श्यामा महारानी व परमधाम की सखियां परमधाम में रहते हुए भी उनको नहीं जानती थी व न ही उनकी लीला को पहचानती थी इसलिए कि जब तक मेरे आनंद अंग के स्वरूपों को मेरे साहिबी के स्वरूप सत अंग अक्षर ब्रह्म के खेल की पहचान करवाने के लिए वहां नहीं उतारूगां अर्थात् जुदायगी नहीं दूगां तो मेरे इश्क की भी पहचान इनको नहीं होगी। इतना दिल में लेते ही अक्षर ब्रह्म के भी दिल में यह बात आ गई कि मैं पारब्रह्म की आनंद की लीला को देखूं अर्थात् आनंद अंग को अक्षर की आदि लीला, जो बनती और मिटती है वो लीला दिखाने के लिए और अक्षर ब्रह्म को अपने रंग मोहोल में जो खिलवतखाने में आनंद इश्क की अनादि लीला, जिसका वो अधिकारी नहीं था, दिखाने के लिए परमधाम में सब पर फरामोशी का आवरण (पर्दा) डाल कर अपने हुकम से स्वयं इस मिथ्या माया को बनवाया और अक्षर ब्रह्म की आतम और सखियों व श्यामा जी की आत्मा को दुनियां में उतारा।

ताके तीन तकरार कहे, सो भये तीनों इण्ड ।
ताकी बीतक जुदी-जुदी, माया मिथ्या नट ब्रह्मांड ॥४॥

अक्षर को परमधाम के प्रेम की अनादि लीला, सखियों को व श्यामा जी को अक्षर की कुदरत की मिथ्या माया की लीला दिखाने का जो विचार दिल में लिया, उसके तीन मिथ्या माया के नाटक के तीन ब्रह्मांड बनाए। इन तीनों ब्रह्मांडों में जुदा-जुदा लीला हुई।

पहले अग्यारे बरस, और ऊपर बावन दिन ।
काल माया ब्रह्मांड में, खेले मिल निज जन ॥५॥

अब हम सब जानते हैं कि यह जो सारा माया का ब्रह्मांड है, इसके मालिक परमात्मा का नाम आदि नारायण है। अब उसको हुकम हुआ कि हम तेरे ब्रह्मांड में तेरी माया को देखने के लिए अपने सत अंग अक्षर ब्रह्म व अपनी आत्माओं के साथ आ रहे हैं। जिसकी सब सूचना ऊपर दिए गए चारों युगों के राजाओं का प्रमाण है। अट्ठाईसवें द्वापर के बिलकुल अन्त में नारायण ने स्वतः सतयुग से लिखवा दिया था कि ययाति के वंश में मैं आ कर जन्म लूंगा और वहां मेरा ही नाम कृष्ण होगा। फिर उस तन में बैठ कर पारब्रह्म लीला करेंगे जिसका प्रमाण माहेश्वर तंत्र में निम्न है -

Nijanand App

''ययातिकुलजातस्य यदुराजस्य वेश्मनि ।
वासुदेवो भविष्यामि नाम्ना कृष्णेति विश्रुतः ॥''

माहेश्वर तंत्र, अ० ४, श्लोक ४५

★ टिप्पणी

यह प्रसंग उस समय का है जब लक्ष्मी जी अपने पति विष्णु भगवान जी से पूछ रही थीं कि तुम किसका ध्यान धरते हो तो वह नहीं बता सके। वह गोलोक योगमाया में सबलिक ब्रह्म के स्वरूप जिसका वह ध्यान धरते थे, बिना परा शक्ति जाग्रत बुध के असमर्थ थे इसलिए नहीं बता सके। जिस पर लक्ष्मी जी ने सात कल्पांत तपस्या की फिर भी नहीं पा सकीं तो फिर विष्णु भगवान ने लक्ष्मी जी से कहा - हे सुंदरी ! सुनो। अट्ठाईसवें द्वापर के अंत में स्त्री, गऊ, ब्राह्मण, साधु, धार्मिक, तपस्वी, वर्णाश्रमों के सेतु, अपने-२ धर्म पर चलने वाले लोगों को जब राजा रूपी असुर पीड़ित करेंगे, तब मैं धर्म की रक्षा के लिए और वेद धर्मों आदि की रक्षा के लिए, दुष्टों के विनाश के लिए ययाति के कुल में उत्पन्न यदु राजा के घर में वासुदेव के रूप में कृष्ण नाम से प्रसिद्ध होऊंगा। तब मेरे तन में बैठ कर अक्षरातीत पारब्रह्म लीला करेंगे। वह लीला करके जब चले जाएंगे तब मैं आपको वही लीला करके दिखाऊंगा उससे पहचान लेना मैं किसका ध्यान धरता हूं। अब भागवत का प्रमाण भी लीजिए -

''आसन वर्णास्त्रियो हास्य गृह्णतोनुयुगं तनूः ।
शुक्लो रक्तस्तथा पति इदानीं कृष्णतां गतः ॥''

दसवां स्कन्ध, अध्याय-८, श्लोक १३

तब गर्गाचार्य, जो उनके कुल के पुरोहित थे उन्होंने कहा हे नन्द जी ! ये जो तुम्हारा पुत्र सांवला काला है, यह प्रत्येक युग में जन्म लेता है। पिछले युगों में इसने क्रमशः श्वेत, रक्त और पीत-यह तीन विभिन्न रंग स्वीकार किए थे। अब की यह कृष्ण वर्ण हुआ है इसलिए इसका नाम कृष्ण होगा। पहले यह वसुदेव के घर भी पैदा हुए थे इसलिए इसका नाम ''वासुदेव'' भी है।

अब हे मेरे प्यारे सुन्दरसाथ जी ! जिन के पास श्री राजजी की कृपा से निजबुध आ गई है उनको इस भेद का पता चल गया है कि शास्त्रों में जो लिखा है कि पारब्रह्म नाम, गुण और खट प्रमाण से परे हैं तो वह कैसे अक्षरातीत को नाम में बांध सकते हैं। बिना निजबुध वाले ही पारब्रह्म को कृष्ण नाम में बांधे बैठे हैं। वह स्वयं विचार करें।

Nijanand App

इस कारण से विष्णु भगवान को अट्ठाईसवें द्वापर युग के अन्त में, जब कंस का राज्य था और उसकी बहन देवकी और वसुदेव जेल में बंद थे, तब जब आठवां पुत्र गर्भ में था तो पूर्व जन्म में दिए गए वरदान के अनुसार आकर चतुर्भुज स्वरूप में दर्शन दिया और बताया कि पूर्व जन्म में तुम दोनों पृश्नि और सूतपा नाम के चक्रवर्ती राजा थे पर तुम्हारे घर सन्तान नहीं थी। तुमने मेरी तपस्या करके मेरे जैसा पुत्र मांगा था इसलिए मैं ही तुम्हारे गर्भ से जन्म लूंगा। जन्म के बाद मुझे गोकुल में नंद के घर पहुंचा देना यह कह कर अदृश्य हो गए।

तब रोहिणी नक्षत्र वृख राशि में जिस स्वरूप ने दर्शन दिया था। उसने दो भुजा वाले बालक के रूप में जन्म लिया इसलिए उस समय उनका नाम ''ओऽम् नमो भगवते वासुदेवाय'' देवी देवताओं ने पुष्प बरसाते हुए पुकारा। अब जब गोकुल में नंद जी के घर पिता वसुदेव छोड़ आए और कन्या को लेकर वापिस आ गए। तब उस विष्णु वाले तन में अक्षर की आतम और अक्षरातीत के जोश ने (शक्ति ने) प्रवेश किया।

''मूल सुरत अछर की जेह, जिन चाह्या देखों प्रेम स्नेह।
सो सुरत धनी को ले आवेस, नंद घर कियो प्रवेस॥''

(प्रकास हिन्दुस्तानी, प्रगट वाणी, ३७/२९)

और परमधाम की आत्माओं ने वृज (गोकुल) की युवा कन्याओं में प्रवेश किया और वृखभान जी की कन्या जिसका नाम राधिका था। उसके अंदर परमधाम की श्यामा महारानी जी ने प्रवेश किया और मिथ्या माया में आकर मिटने वाले तनों को धारण किया। अब इसकी पहचान के कुछ प्रमाण लीजिए :

इस तन के अंदर बैठे अक्षर और अक्षरातीत की पहचान करने के लिए शंकर भगवान जी, जिनको सतयुग से पता था तुरन्त भिखारी का रूप धारण कर गोकुल में नंद जी के द्वार पर भिक्षा का बहाना करके यशोदा माता जी से दर्शनों के लिए विनती करने लगे और दर्शन किए, जिसका प्रमाण शास्त्रों में है। उधर उसी रात को तड़फ-तड़फ कर बिताने के बाद प्रातः ही वह परमधाम की आत्माए जो मिथ्या तन में बंध चुकी थी उनके मन में क्या विचार हुआ -

''ज्यों नींद में देखिए सुपन, यों उपजे हम बृज वधू जन।
उपजत ही मन आसा घनी, हम कब मिलसी अपने धनी॥''

(प्रकास हिंदुस्तानी, ३७/२६)

इन गोपियों ने तो परमधाम के सम्बंध से प्रातः अपने प्राणनाथ, अपने धनी के हिसाब से सिनगार किया। जिसका प्रमाण भागवत में है तो, किंतु व्यास जी ने कोई वर्णन नहीं किया कि गोपियों ने क्यों सिनगार किया।

Nijanand App

"गोप्यश्चाकर्ण्य मुदिता यशोदायाः सुतोद्भवम् ।
आत्मानं भूषयांचक्रुर्वस्त्राकल्पाञ्जनादिभिः ॥"

(दसवां स्कन्ध, अध्याय-५, श्लोक ९)

यशोदा जी के पुत्र हुआ है, यह सुन कर गोपियों को भी बड़ा आनंद हुआ । उन्होंने सुन्दर-२ वस्त्र, आभूषण और अञ्जन आदि से अपना श्रृंगार किया ।

वहां गोपियां नंद जी के घर बालक के बधावे के वहाने से गईं और झूले (पालने) में झूलते हुए बालक के रूप में अपने धनी को पहचाना कि ओहो ! हमारे धनी ऐसी नाटक की लीला दिखाकर हमें भुलाएंगे। उसी दिन से उस तन को अपना धनी मानकर अपनी प्रेम की लीलाओं में मग्न हो गईं पर किसी ने भी इस संसार में पहचाना नहीं । कुल अक्ल के मालिक ब्रह्मा जी भी ५ वर्ष तक अहंकार में डूबे रहे । बाद में कोट यत्न करने पर भी जब प्रसाद नहीं मिला तो मुख में घास का तिनका, गले में कपड़ा डाल कर ५ वर्ष के कृष्ण नाम वाले तन के चरणों में दण्डवत् प्रणाम कर क्षमा मांगी । हे मेरे प्रभु ! इस माया के तन के अंदर विराजमान आपके स्वरूप की पहचान मैं नहीं कर सका । मुझे क्षमा कीजिए ।

फिर ८ वर्ष की आयु में धीरे-२ जब सब गोपियां माया के परिवारों में लीन हो कर अपने धनी को भूलने लगीं तब इन्द्र पूजन के अवसर पर अपना ही नाटक का एक रूप धर कर गोवर्धन पर्वत का पूजन कराया और इंद्र का अभिमान तोड़ा । अपनी आत्माओं को किसी देवी-देव का पूजन नहीं करने दिया । इससे रुष्ट होकर इन्द्र भगवान ने अति प्रकोप ८ दिन तक बृज गोकुल पर ढाया । पर उस प्रकोप से अपनी गोपियों को गोवर्धन पर्वत द्वारा बचाया । अब धीरे-धीरे माया ने उन गोपियों के अंदर बैठी आत्माओं को परमधाम की याद भुला दी । ग्यारह वर्ष तक प्रेम की लीला और बावन दिन तक विरह की लीला जो कालमाया के मिथ्या ब्रह्माण्ड की थी, वह दिखाकर उस ब्रह्माण्ड का प्रलय कर दिया । स्वयं अक्षर ब्रह्म की आतम को लेकर योगमाया के ब्रह्माण्ड में नया वृंदावन, अपना नया रूप, नया चन्द्रमा, नया जमुना तट बनाकर अपनी आत्माओं को बुलाकर अक्षर को अपने आनंद की अखण्ड लीला दिखाई ।

इस ग्यारह साल बावन दिन वाले तन को विष्णु भगवान जी ने धारण किया । चरणों में आकर ब्रह्मा, शंकर जी और इंद्र भगवान भी भूल मानकर क्षमा मांगते हुए नतमस्तक हुए इसलिए दुनियां कृष्ण को पूर्ण ब्रह्म कहती है पर अंदर बैठे स्वरूप की पहचान किसी ने नहीं की ।

हे मेरी परमधाम की आत्माओं, लाडले सुंदरसाथ जी ! वहां मैंने ही कृष्ण के तन में ग्यारह साल और बावन दिन तक बैठकर तुम्हारे साथ, जो तुमने गोपियों का रूप धारण किया था, लीला की । वहां तुमने ही जब मेरे असल स्वरूप की पहचान नहीं की तो दुनियां अगर कृष्ण को पारब्रह्म मान रही है तो उनका क्या दोष है ?

Nijanand App

ता पीछे आये रास में, इण्ड जोगमाया जाग्रत ।
जहां विरह विलास दोऊ, देख के फिरे इत ॥६॥

उसके पश्चात् दूसरा ब्रह्माण्ड जो योगमाया का है, जहां कृष्ण तत्व अखण्ड तत्व है । वहां जो चीज एक बार बन जाती है फिर उसका नाश नहीं होता फिर उस ब्रह्माण्ड में जा कर नया रूप किशोरावस्था वाला जैसा परमधाम में है वैसा धारण किया । फिर योगमाया को आज्ञा देकर नया वृन्दावन, नया जमुना तट, नया चन्द्रमा तथा कुल सामग्री नई, अक्षर की बुद्धि, केवल ब्रह्म में बनवायी । जहां अखण्ड नूर ही नूर तो है, पर आनन्द नहीं है । वहां खड़े होकर बांसुरी बजाई और अपनी आत्माएं, जो गोपियों के तनों में कालमाया वाले मिथ्या ब्रह्मांड में थी, उनको बुला लिया । जैसे ही उन आत्माओं ने योगमाया में प्रवेश किया तब योगमाया को आदेश दे कर सब आत्माओं को भी अखण्ड तन योगमाया वाले अति सुन्दर अपने जैसे दिलवाए और इधर कालमाया का प्रलय कर दिया । बांसुरी का बजना तो चौदह लोक के नर-नारियों ने सुना पर वहां कोई पहुंच नहीं सका इसलिए कोई भी उस रास को कहां है व क्या लीला हुई नहीं जानता। उस महारास का वर्णन अब स्वंय श्री प्राणनाथ जी ने ही आकर बताया कि मैं ही बृज व रास में था ।

"एह सरूप ने एह वृन्दावन, ए जमुना त्रट सार ।
घर थी तीत ब्रह्मांड थीं अलगो, ते तारतमें कीधो निरधार ॥"

(रास, १०/३६)

"अब जोत पकरी न रहे, दूजा बेधिया आकास ।
जाए लिया इण्ड तीसरा, जहां अखण्ड रजनी रास ॥"

(कलस हिंदुस्तानी, २०/१)

हे मेरे प्यारे सुन्दर साथ जी ! अब आप ही विचार कीजिए जब कालमाया के ब्रह्माण्ड का ही प्रलय हो गया तो व्यास तो क्या कोई भी रहा ही नहीं तो कोई क्या उसका वर्णन करता । भागवत में तो व्यास जी ने इस तीसरे नए ब्रह्माण्ड में प्रतिविम्ब की जो लीला ग्यारह दिन की हुई । उसका वर्णन किया है ।

उस योगमाया के अखण्ड वृन्दावन में आनन्द का विलास और विरह दोनों लीलाओं का आनन्द लिया क्योंकि कुल आत्माएं और अक्षर ब्रह्म इस लीला में भूल गए थे तो उनको सुध देने के लिए अन्तर्ध्यान होकर अपना जोश जब खैंचा तो क्या हुआ ?

"फेर मूल सरूपें देख्या तित, ए दोऊ मगन होए खेलत ।
जब जोस लियो खेंच कर, तब चित्त चौंक भई अछर ॥"

(प्रकास हिंदुस्तानी, ३७/४१)

परमधाम में विराजमान मूल स्वरूप अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी ने अपनी शक्ति को जैसे ही वापस खैंचा तब अक्षर ब्रह्म की आत्मा उस योगमाया वाले तन, जो श्री अक्षरातीत ने रास दिखाने के लिए नटवर भेष धारण किया था, उसे देखकर चौंक उठी और वह बोले -

Nijanand App

"कौन बन कौन सखियां कौन हम, यों चौंक के फिरी आतम ।
रास आया मिने जाग्रत बुध, चुभ रही हिरदे में सुध ॥"

(प्रकास हिंदुस्तानी, ३७/४२)

ऐसा होने पर जो लीला वह स्वप्न में देख रहे थे वह जाग्रत बुध में अखण्ड हो गई और चित्त में सुध आ गई कि मैं यह लीला सपनें में योगमाया में देख रहा था और उधर सखियों को भी विरह वियोग का दुःख देखना पड़ा । दोनों को सुध दिलाने के पश्चात् अव परमधाम का आवेश लेकर उस तन में प्रवेश किया ।

"आया सरूप कर नए सिनगार, भजनानंद सुख लिए अपार ।
दोऊ आतम खेलें मिने खांत, सुख जोस दियो कई भांत ॥"

(प्रकास हिंदुस्तानी, ३७/४६)

अर्थात् अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी ने फिर उनको परमधाम के आनन्द की लीला जो उन्होंने मांगी थी वह दिखाई थी और सब के मनोरथ पूर्ण किए । तब वहीं पर जमुना जी में स्नान कर रास वाले वस्त्र उतार कर नए वस्त्र धारण किए और वन फल आरोगने लगे । वहां श्री राज जी महाराज ने गोपियो से पूछा कि वृंदावन कैसा लगा ? तब गोपियों ने अति महिमा करते हुए कहा कि बृज वाली लीला से कोट गुना यहां सुख तो है पर आपके इस सरूप ने और इस वृंदावन ने जो विरह के वियोग में हमें जलाया है । वह अग्नि की झालों के समान और श्मशान के तुल्य है इसलिए हे धनी ! हमें वहां ले चलो जहां हम आप से और आप हमसे एक पल भी जुदा न हों । तब अक्षरातीत श्री राज जी महाराज ने कहा कि वह तो केवल परमधाम ही है जहां हम एक दूसरे से एक क्षण के लिए भी जुदा नहीं हो सकते । चलो, वहां चलते हैं ।

Nijanand App

"हवे वाला हूं एटलूं मांगू, खिण एक अलगां न थैए ।
जिहां अमने विरह नहीं, चालो ते घर जैए ॥"

(रास, ४७/४३)

अब उधर अक्षर ब्रह्म के चित्त में जब रास अखण्ड हुई तब धनी से प्रार्थना कर के बृज की लीला को भी अखण्ड करने को कहा । तब राज जी महाराज ने अक्षर से कहा जिस तरह मैंने अपनी आत्माओं को ला कर नए तन दिए उसी प्रकार तुम भी बृज, गोकुल, मथुरा के कुल जीवों को योगमाया के सबलिक में अखण्ड कर दो तो लीला ज्यों की त्यों होने लगेगी । तब अक्षर ने कहा हे धनी ! पहले वाले बृज में तो हम और तुम कृष्ण के तन में लीला कर रहे थे अब कृष्ण कौन बनेगा ? तब श्री राज जी महाराज ने कहा - जीवों के साथ उनके मालिक विष्णु भगवान ही लीला कर सकते हैं इसलिए उस विष्णु भगवान को अखण्ड कर दो तो वह ज्यों की त्यों लीला करने लगेगा । अक्षर ब्रह्म ने ऐसा ही किया क्योंकि वह जीवों को अखण्ड कर सकते हैं इसलिए वह विष्णु भगवान ११ साल ५२ दिन वाले रूप में आज भी लीला कर रहे हैं ।

अखण्ड वृन्दावन की रास लीला में विरह और बिलास की लीला दिखा कर श्री राज जी महाराज, श्यामा जी और अपनी आत्माओं को लेकर परमधाम आए और रास को सबलिक ब्रह्म में केवल ब्रह्म से हटा कर अखण्ड कर दिया । आज इस बांके बिहारी कृष्ण के तन में न अक्षर हैं न अक्षरातीत हैं और राधिका जी के तन में श्यामा जी नहीं हैं बाकी गोपियों के तन में आत्माएं भी नहीं हैं वह परमधाम गईं इसलिए उस रास वाले कृष्ण और राधिका जी से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है ।

"पीछे जोगमाया को भयो पतन, तब नींद रही अछर सैंयन ।
ब्रजलीला सों बांधी सुरत, अखण्ड भई चढ़ आई चित्त ॥"

(प्रकास हि०-प्रकरण ३७ चौपाई ४८)

उधर परमधाम में आत्माएं और अक्षर की आतम गईं तो सही, पर फरामोशी का आवरण नहीं हटा इसलिए खेल में जो अति दुख का वर्णन सुना था उसकी बार-२ मांग करके धनी से कहा कि माया ने हमारा क्या बिगाड़ा ? हमने पूरा दुःख का खेल देखना है । धनी ने तो बार-बार मना किया पर ए परमधाम की सखियों ! तुमने एक ना सुनी और तुम्हारी इच्छा पूरी करने के लिए अक्षर ब्रह्म को पहले वाला ही ब्रह्मांड ज्यों का त्यों बनाने का हुकम दिया । तब अक्षर ब्रह्म ने कहा हे धनी ! ब्रह्माण्ड तो ज्यों का त्यों बन जाएगा लेकिन अब कृष्ण कौन बनेगा ? तब अक्षरातीत श्री राज जी महाराज ने कहा इस ब्रह्मांड में त्रिदेवा नए बनाओ और विष्णु पर शक्ति गोलोक वाले बाल-मुकुन्द की बिठाओ और इस ब्रह्मांड के बृज गोकुल व मथुरा वाले जीवों पर अखण्ड गोलोक के बृज, गोकुल व मथुरा के जीवों की सुरता को बिठाओ तो लीला ज्यों की त्यों होनी शुरू हो जाएगी ।

Nijanand App

ब्रज-रास दोऊ अखण्ड, कर चेतन बुधि फिरे मन ।
ए ब्रह्माण्ड तीसरा, जहां महम्मद आये रोसन ॥७॥

तो- हे प्यारे सुन्दर साथ जी ! ऐसा राज जी महाराज ने क्यों करने को कहा । अब यह सुनो । क्योंकि परमधाम में अक्षर ब्रह्म की कोई सुरताएं नहीं हैं इसलिए पहले वाले बृज में जो अखण्ड हो गया है, उसकी लीला देखने के लिए अक्षर ब्रह्म ने नई २४००० सुरताएं बनाई जो कुमारिका और बाल ग्वालों के जीवों पर आ कर बैठीं । जिसके द्वारा लीला देखते रहे । जब कुमारिकाओं के तन ११ वर्ष के बाद किशोरावस्था में आए तो उन्होंने भी कृष्ण कन्हैया जिनके तन में अक्षरातीत लीला कर रहे थे उनसे यह मांग की कि आप हमारे साथ भी लीला करो नहीं तो हम जमुना जी में नग्न स्नान करेंगीं इससे आपकी निन्दा होगी। तब कृष्ण कन्हैया जिनके तन में श्री राज जी विराजमान थे उन्होंने कहा कि हम आपके साथ लीला नहीं करेंगे (क्योंकि आप अक्षर की सुरताएं हो) पर कुमारिका बिना जाग्रत बुध के थीं इसलिए इस बात का बेवरा न समझ सकी और जमुना जी में वस्त्र उतार कर स्नान करने लगीं । तब कृष्ण कन्हैया जिनमे अक्षरातीत विराजमान थे वह जमुना तट पर आए और कुमारिका सखियों के वस्त्र उठा कर वृक्ष पर चढ़ बैठे और बोले अब जिसने मेरे साथ लीला करनी है वह जल से बाहर आओ तब वह क्वारी कन्याएं लोक-लाज मर्यादा की प्रकृति में बंधी हुई कैसे जल से बाहर निकलती और प्रार्थना करने लगीं कि आप हमारे साथ जल में आकर लीला करो तब श्री कृष्ण जी ने कहा कि तुम्हारा पतिव्रता सतीत्व धर्म खत्म हो गया क्योंकि वरूण देव को जल के अंदर नग्नावस्था में आपने अंगीकार कर लिया है । तब गोपियों ने प्रार्थना की कि हमारे वस्त्र फेंको आज के बाद हम कभी भी जल में नग्न स्नान नहीं करेंगीं । तब श्री कृष्ण जी ने उनको वस्त्र दिए और सबने वस्त्र धारण किए । तब कृष्ण कन्हैया से उन्होंने कहा कि हमारे साथ लीला क्यों नहीं करते । तब उनके साथ लीला करने का वचन दे दिया परन्तु ११ साल ५२ दिन में लीला नहीं की। इस सम्बन्ध से कुमारिका सखियां भवसागर से पार हो गई और उनकी सुरताओं ने भी हमारे तनों में प्रवेश किया और २-२ ने एक-एक तन में बैठ कर रास की लीला को देखा । अब उधर जब बृज भी अखंड हो गई तो कुमारिका सखियों के जीव भी अखण्ड हो गए और उन्हें योगमाया के ब्रह्मांड में जाग्रत बुध मिली तो उन्होंने जाग्रत बुध से रास को देखा । सबलिक में अखण्ड होने वाली ब्रज एवं रास की लीला का प्रतिबिम्ब मनस्वरूप अव्याकृत में भी पड़ा है ।

Nijanand App

"बेन सुन के चली कुमार, भव सागर यों उतरी पार ।
इनकी सुरत मिली सब सखियों माहें, अंग याके रास में नाहें ॥"

(प्रकास हि०, प्रकरण-३७, चौपाई ३७)

फिर योगमाया में कुमारिका सखियों के अखण्ड जीवो ने कृष्ण जी से कहा हे प्रभु ! आपने हमारे साथ लीला करने का वचन दिया था वो भी पूरा नहीं किया और अब हमको रास की लीला भी देखनी है । इस कारण से उन की सुरता इस प्रतिबिम्ब के ब्रह्माण्ड में आएगी ।

अब अपने धनी के हुकम से अक्षर ब्रह्म ने ज्यों का त्यों ब्रह्माण्ड बनाया, नए त्रिदेव बनाए और यह ब्रह्माण्ड, जो अब तीसरा चल रहा है, ज्यो का त्यों बनाया । संध्या के समय बांसुरी की आवाज सुनते हुए सब के सब जीव ज्यों के त्यों बन गए और किसी को यह ज्ञान ही नहीं हुआ कि हम कौन हैं और यह ब्रह्मांड कौन सा है । आज जो मथुरा, गोकुल है, वहां पर इस विष्णु भगवान ने नया तन ११ साल ५२ दिन वाला ही धारण किया और उसमें गोलोक की शक्ति ने यहां के वृंदावन में बांसुरी बजाई और जिन जीवों पर गोलोक की सखियों की सुरतायें शक्ति आई थी वह गोपियों के रूप में बांसुरी को सुन कर उस रास लीला में शामिल हुई और उस बांसुरी को भी सुनकर चौदह लोक नाच उठा क्योंकि गोलोक की शक्ति बांसुरी बजा रही थी । इस ब्रह्माण्ड के शंकर भगवान जी ने इसे सुनने के लिए प्रवेश करना चाहा परन्तु पुरूष तन में होने के कारण नहीं जा सके । उस समय एक नरसैंया नाम का भक्त, जो कृष्ण जी का भक्त था, बांसुरी की आवाज को सुन कर रात होने के कारण हाथ में मशाल ले कर भागा पर उसके आड़े भी चार दरवाजे आए जिस कारण वह भी प्रवेश नहीं कर सका और इसी वृंदावन के बाहर ही खड़ा रहा और उस गोलोक वाली शक्ति की लीला को सुन कर इतना मग्न हो गया कि सारी मशाल भी जल गई और उसका बाजू भी जल गया पर उसे सुध नहीं रही । यह प्रसंग आज से लगभग ५००० वर्ष पूर्व का है, जब प्रतिबिम्ब की लीला हुई थी । हे साथ जी ! अब इसका प्रमाण देता हूं -

"जो बल किया नरसैंयें, कोई करे ना और ।
हद के जीव बेहद की, लीला देखी या ठौर ॥"

Nijanand App

"नरसैंया दौड़या रस को, बानी करे रे पुकार ।
रस जाए हुआ अंदर, आड़े दरवाजे चार ॥"

(प्रकास हि० प्रकरण - ३१, चौपाई-५६, ५७)

हे, प्यारे सुंदर साथ जी ! वह चार दरवाजे इस प्रकार थे पहला स्थूल, शरीर, दूसरा सूक्ष्म, जो उसके तन में जीव था, तीसरा कारण, यह सारा चौदह लोक का ब्रह्मांड और चौथा महाकारण योगमाया का ब्रह्मांड था, जिसमें हद का जीव जा नहीं सकता था ।

अब उधर परमधाम में श्री राज जी महाराज अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानंद ने विचार किया कि यदि बृज और रास की तरह कृष्ण या किसी और तन में बैठ कर लीला करूंगा तो संसार वाले व मेरी परमधाम की आत्माएं भी तन को ही देखेंगे । मेरे स्वरूप की पहचान नहीं कर पाएंगे इसलिए जीवों के असल परमात्मा, ईश्वरी सृष्टि के महाप्रभु और ब्रह्म सृष्टि के धाम धनी कैसे जाहेर होऊंगा यह विचार करके परमधाम में सखियों से कहा कि तुम खेल में जा तो रही हो निश्चय ही जाकर भूल जाओगी तब मैं तुम्हारे कारण अपना रसूल जो सब परमधाम की गवाहियां लेकर आएगें तुम उन पर इश्क ईमान लाना पर तुम ला न सकोगी तो फिर मैं श्यामा जी, जो तुम्हारे सुभान हैं उनको जाग्रत बुध का ज्ञान देकर भेंजूगा जिससे वह क्षर, अक्षर व अक्षरातीत के सब भेद खोलेंगे पर उस ज्ञान को भी सुन कर तुम होश में न आओगी । तब अंत में मैं स्वयं परमधाम की निजबुध तथा खिलवत का कुल ज्ञान लेकर तुम्हारे जैसा तन धारण करूंगा। जिस कारण से तुम मेरे असल स्वरूप असल धाम की पहचान फिर भी न कर सकोगे जिसका प्रमाण इस प्रकार है -

"हकें कहया रूहन को, जिन तुम जाओ भूल ।
इश्क इमान ल्याइयो, मैं भेजोंगा रसूल ॥"

(किरंतन, प्रकरण १११ चौपाई-३)

"हादी मीठे सुकन हक के, कहेगा तुमें रोए-रोए ।
तुम भी सुन सुन रोएसी, पर होस में न आवे कोए ॥"

(खिलवत, प्रकरण-११ चौपाई-२७)

मैं रूह अपनी भेजोंगा, भेख लेसी तुम माफक ।
देसी अर्स की निसानियां, पर तुम चीन्ह न सको हक ॥

(खिलवत, प्रकरण-११ चौपाई-२६)

तब रूहों ने कहा हे धनी ! सौ बार आजमा कर देखो हम भूलेंगे नहीं । केवल बातें सुना सुना कर मत बहकाओ, करके दिखाओ ।

Nijanand App

"ए देखाओ अपनी साहेबी, और कैसा इस्क है तुम ।
राजी करो देखाए के, हम बैठें पकड़ कदम ॥"

(खिलवत, प्रकरण ९, चौपाई-३७)

तब राजजी महाराज ने देखा कि हिंदुओं के शास्त्र-पुराणों में तो मेरे आने के कुल प्रमाण हैं परन्तु यहूदियों और फिरंगियों में, जो अंजील, जंबूर और तौरेत किताबें ईसा, मूसा और दाउद ला चुके थे उनमें मेरे श्री राज जी महाराज के स्वरूप व परमधाम की लीला का वर्णन नहीं आया था इसलिए सबका साहेब बन कर कैसे जाहेर होउंगा तो अक्षर की आतम और अपना जोश जो वृज व रास में कृष्ण नाम के तन में था उसी को हुकम दे कर अरब में मुस्तफा बेग, जो पण्डित अब्दुल्ला के सपुत्र थे, उनमें प्रवेश किया । जिसका प्रमाण निम्न है -

"स्याम रास से बरारब, ल्याया साहेब का फुरमान ।
हकीकत अखण्ड धाम की, तिन बांधी सब जहान ॥"

(खुलासा-प्रकरण १३, चौपाई ३१)

गुरू नानक देव जी की वाणी में भी यह प्रमाण है -

"पार जात गोपी ले आया, वृंदावन में रमन किया ।
ले नीले कपड़े वस्त्र पहने, तुरक पठानी अमल किया ।"

(गुरू नानक देव) गुरू बानी

वहां उस तन में बैठ कर जबराईल को हुकम दिया कि महंमद साहब की आतम को परमधाम ले आओ पर जबराईल फरिश्ता योगमाया तक तो ले गया । अक्षर धाम से आगे नहीं जा सकता था इसलिए वहां असराफील जिसको कुरान में रफ रफ का तख्ता कहा है और उनकी आत्म को चांदनी चौक तक ले गया फिर वहां से श्री राजजी महाराज ने अपना इस्क देकर मूल-मिलावे में बुलाया और ९०,००० हरूफ कहे और हुक्म दिया कि ३०,००० हरूफ से अरब के रहने वाले यहूदियों को आग, पानी, पत्थर व मिथ्या कर्म काण्ड से हटा कर मुझ पर शरीयत की बंदगी लागू करो और ३०,००० जो मेरी हकीकत के हैं यदि तुम्हें कोई मलकी फरिश्ता मिले तो उसे कहना पर ३०,००० हरूफ जो मेरी खिलवत की बातें हैं उन्हें मैं जाहेर करूंगा । उसका अधिकार तुम्हें नहीं है । यह सुन कर महंमद साहब की आत्म-मूल मिलावे से बाहर आई । श्री राजजी महाराज ने अपना इस्क खैंच लिया और जबराईल के साथ आकर फिर उसी तन में प्रवेश किया और मुसलमानों को कहा कि मैं अल्लाह ताला को मिल कर आया हूँ उनकी अमरद सूरत मैंने देखी है उनका महल नौ भोम दसवी आकासी वाला है । वहां एक यमुना जी (जोए) भी बहती है जो कल कौसर (मदियम सर, हौज कौसर) में जाकर मिलती है और उस अल्लाह ताला ने ग्यारहवीं सदी में दुनियां में अपनी उम्मत के साथ आने का वायदा किया है ।

Nijanand App

रास लीला खेल के, आये बरारब में ।
तहां बात सब जाहिर करी, चल्या मारग इनसे ॥८॥

बृज रास लीला करने के बाद जिस तन में अक्षर की आत्म धनी का जोश था उसने आकर मुस्तफा के तन में बैठ कर शरीयत को लागू किया और अल्लाह ताला के आने की तथा परमधाम की सब हकीकत जाहेर की । इस ज्ञान के द्वारा इस्लाम धर्म चलाया ।

छे दिन कुरान में, वाके भए जब ।
ता दिन की हकीकत, सारी छिप कही तब ॥९॥

और कुरान में यह भी कहा कि अल्लाह ताला पूर्ण ब्रह्म दुनियां में आकर छः दिन लीला करेंगे पर उसको इशारे के रूप में ही कहा, खुलासा नहीं किया ।

तामें एक दिन ब्रज में, दूसरे दिन रास ।
एक रात तहां खेले, देखे विरह विलास ॥१०॥

इन छः दिनों का बेवरा इस प्रकार है - एक दिन ब्रज का, जिसको कुरान में हूद नबी के घर तूफान आना कहा है । दूसरा दिन रास का, जिसको कुरान में नूह नबी को किश्ती से पार उतारने के बारे में कहा है । अखंड रास की लीला एक रात की है जहां विरह और विलास के सुख का अनुभव किया । यह दूसरे दिन की लीला है ।

मनोरथ पीछे रहे, तब तीसरो भयो इण्ड ।
तामें आये बरारब, आमर फैलाया ब्रह्मांड ॥११॥

इसके पश्चात ब्रज, रास, अखंड करके जब वापिस परमधाम में आत्माऐ गई तो खेल देखने की इच्छा बाकी रह जाने के कारण से यह ब्रह्मांड तीसरा कालमाया का बना है । जिसमें सबसे पहले श्री राजजी महाराज की शक्ति ने अक्षर की आत्म के साथ अरब में महंमद साहब के तन में प्रवेश करके परमधाम के अखंड ज्ञान से इस्लाम धर्म को फैलाया ।

एह है दिन तीसरा, रहे साठ बरस और तीन ।
रब्बानी कलाम अल्लाह के, सब को दिया आकीन ॥१२॥

इस अरब की लीला को तीसरा दिन कहा है उस तन में त्रेसठ वर्ष लीला की और कुराने पाक, जो अल्लाह ताला की वाणी है से संसार को मिथ्या ज्ञान से हटा कर एक खुदा पर यकीन दिला कर उसकी बंदगी कराई ।

Nijanand App

एह कथा बहुत है, विस्तार नहीं सुमार ।
पर ए चौथे दिन की, सैयां करो विचार ॥१३॥

इस अरब में लाए कुरान का विस्तार जो तीसरे दिन की लीला है, बहुत है पर ए परमधाम की आत्माओं मेहरबान सुन्दरसाथ जी ! तुम चौथे दिन की जो लीला है उस पर विचार कर देखो ।

जब महंमद साहेब की, नव सदी बीतक ।
सवा नव बाकी रहे, दसमी के बुजरक ॥१४॥

महंमद साहब ने कुरान में ईसा रूह अल्लाह का आना १००० वर्ष के बाद लिखा है । उसके अनुसार ही जब सवा नौ साल बाकी रह गए तो दसवीं सदी में श्यामा जी के इस ब्रह्मांड में प्रगट होने की विशेषता सत्य होती है अर्थात् ९९० वर्ष होने पर वि० सं० १६३८ में श्यामा महारानी जी आकर पुनः देवचन्द्र जी के तन में प्रगटीं ।

साल नव सै नब्बे मास नव, हुए रसूल को जब ।
रूह अल्लाह मिसल गाजियों, सैयां उतरे तब ॥१५॥

महमंद साहब के तन छोड़ने के बाद जब ९९० साल नौ महीने बीत गए तब श्री राजजी महाराज के हुक्म के अनुसार श्री श्यामा महारानी अपनी उम्मत, जिसे कुरान में मर्दों की जमात कहा है, को लेकर इस मिथ्या जगत में जुदा-जुदा, नगर, गांव, जातियों के तनों में आकर प्रवेश किया ।

सम्वत सोलह सै अड़तीसे, आसो सुदी चौदस को ।
जन्मे दिन श्री देवचन्द्र जी, आए प्रगटे मारवाड़ मों ॥१६॥

सम्वत् १६३८ आसो (क्वार) सुदी चौदस के दिन देवचन्द्र जी का जन्म मारवाड़ में हुआ, तब उस तन में श्यामा महारानी आकर प्रगट हुए । (देवचन्द्र जी के तन में श्यामा महारानी प्रगट हुए ।)

तामें गाम उमरकोट, मत्तू मेहता घर अवतार ।
माता जो कुंवरबाई, ताको कहों विस्तार ॥१७॥

मारवाड़ देश के उमरकोट गांव में श्री मत्तू मेहता कुंवर बाई जी के घर देवचन्द्र जी ने जन्म लिया । अब उसका विस्तार कहता हूं ।

जब जनमे मारवाड़ में, घर अति आनन्द नर नार ।
यह बधाई ब्रह्मांड में, त्रिगुण समेत विस्तार ॥१८॥

जब मारवाड़ में देवचन्द्र जी का जन्म हुआ तो मत्तू मेहता के घर यह पहली सन्तान होने से घर के सगे-सम्बन्धियों में तो अति आनन्द हुआ ही था पर श्यामा महारानी, जो अक्षरातीत पारब्रह्म के आनन्द स्वरूप हैं, उनका इस मिथ्या ब्रह्मांड में प्रगट होना सारे ब्रह्मांड और त्रिदेवा को भी बधाई है ।

Nijanand App

सुखदाई सबन को, अखण्ड करन हार ।
विश्व बन्दे अक्षर लों, सुके परीक्षित सों कह्यो विचार ॥१९॥

क्योंकि श्यामा महारानी जिनकी वन्दना संसार के जीवों से ले कर देवी-देवता, त्रिदेवा, आदि नारायण, योगमाया की सब शक्तियां और अक्षर ब्रह्म तक भी करते हैं । उनका प्रगट होना शुकदेव जी ने राजा परीक्षित से भागवत में इस प्रकार कहा है ।

"देवापिः सन्तनोर्भ्राता, मरूश्चेक्ष्वाकुवंशजः ।
कलाप ग्राम आसाते, महायोग बलान्वितौ ॥"

"ताविहैत्य कलेरन्ते वासुदेवानुशिक्षितौ ।
वर्णाश्रमयुतं धर्म पूर्ववत् प्रथयिष्यतः ॥"

(भागवत स्कंध १२/२/३७,३८)

भीष्म पितामह के पिता राजा शन्तनु के भाई देवापि-इक्ष्वाकु वंशी मरू जो इस समय कलाप ग्राम में स्थित है, वह दोनों भाई बड़े आत्मशक्ति से सम्पन्न थे ।

इन दोनों भाईयों ने सतयुग में जाहेर हुए ज्ञान के द्वारा चक्रवर्ती राज्य को छोड़ कर तपस्या की और यह वरदान पाया कि जो कलियुग में बुद्ध निष्कलंक अवतार ने आकर जो काम करना है तो उनके लिए हम दोनो का ही जन्म होना चाहिए, इतना उनके पास आत्म बल था ।

उसके अनुसार ही कलियुग में निष्कलंक अवतार इनके तनों में प्रगट हो कर अपने अद्‌भुत अलौकिक ज्ञान का विस्तार इस जगत में करेंगे ।

सतजुग के बीज भूत, इनों बीच रहे विस्तार ।
होवे सब में जाहिर, अखंड ए संसार ॥२०॥

इन दोनों के आने का विस्तार सतयुग से ही जाहेर हो चुका था कि २८वें कलियुग में बुद्ध निष्कलंक अवतार प्रगट होंगे और सारे संसार को अखण्ड करेंगे ।

सोई वेद कतेब में, इनों की लिखी साख ।
और उपनिषद भागवत में, लिखी बाणी के भाख ॥२१॥

शास्त्रों में विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार और कुरान में आखरूल जमां इमाम मेहेंदी का जाहेर होना लिखा है । जो भागवत उपनिषद और कई संतों की वाणियों में भी लिखा है ।

Nijanand App

जब को ये ब्रह्मांड, तब के एह वचन ।
जनम से ले बीतक, जाके सुने पतीजे मन ॥२२॥

श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे प्यारे सुंदरसाथ जी । ये सब गवाहियां और प्रमाण तो तब से ग्रंथों में हैं जब से यह ब्रह्मांड बना है पर हम दोनों के प्रगट होने की लीला मूल से अन्त तक लिखी है । उस ज्ञान को सुनने से मन के सब संशय मिट कर पारब्रह्म की सच्ची पहचान होती है ।

ताके ग्रन्थ भाषा मिने, आप अपने किये सब ।
एक मिलाय खोल दीजिए, ए वस्त पावे तब ॥२३॥

अब वह सब प्रमाण, जिस-जिस ग्रन्थ में जुदा जुदा भाषाओं में हैं, उन सब के प्रमाणों में जो छिपे भेद हैं उन सब के भेद केवल तारतम ज्ञान के द्वारा ही खुल सकते हैं । शास्त्रों में जो बुद्ध निष्कलंक अवतार कहा है, कुरान में जो इमाम मेहेंदी, सब का साहेब कहा है और बाइबिल में ईसा रूह अल्लाह (Second Coming of CHRIST) का दुबारा आना कहा है । वह सब हमारी ही हकीकत है । जो तारतम ज्ञान के द्वारा ही समझी जा सकती है ।

सोई सरत कुरान में, लिखी एक सौ बीस बरस ।
चार पांच छठा दिन, तब जाहिर होवे अरस ॥२४॥

जिसकी गवाही कुरान में भी लिखी है कि ईसा रूह अल्लाह आकर दो जामे (तन) पहनेंगे और १२० वर्ष तक अपने ज्ञान के द्वारा दुनियां में जाहेर होंगे । इन्हीं १२० वर्ष को चौथे, पांचवें और छटे दिन की लीला कहा है । छठे दिन की लीला के बाद ही सारे ब्रह्मांड में श्री प्राणनाथ जी अखण्ड परमधाम के धनी, साहिब हैं यह जाहेर होगा ।

सब सृष्टि सेजदा करे, होवे जाहिर अखण्ड धाम ।
जो याद नहीं अक्षर को, सो सुध सबों हुई तमाम ॥२५॥

तब सारी दुनियां उनकी पहचान करके कि श्री प्राणनाथ जी ही पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द हैं, उनके चरणों में सिजदा करेगी और उनके तारतम के ज्ञान के द्वारा ही अखण्ड परमधाम का ज्ञान सारी दुनियां में जाहेर होगा । जो रंग महल में पारब्रह्म की स्वलीला अद्वैत को अक्षर भी नहीं जानता था वो कुलजम स्वरूप की वाणी के द्वारा सब को ज्ञान हो जाएगा ।

जो दृष्टि सुपन जीव की, नहीं लखी मिनें लगार ।
सो दृष्टि अखण्ड सुख में, पहुंची नूर के पार ॥२६॥

जिस खिलवत के सुख को, पूर्ण ब्रह्म के स्वरूप को आज दिन तक अक्षर ब्रह्म भी नहीं जानते थे वो श्री प्राणनाथ जी की कृपा से कुलजम सरूप की वाणी के आ जाने से संसार का तुच्छ जीव जो स्वर्ग, वैकुण्ठ के भेद भी नहीं समझता था, इस ज्ञान की शक्ति के द्वारा निराकार के पार अखण्ड योगमाया, उसके पार अक्षरब्रह्म और उसका धाम, उसके पार अक्षरातीत और रंग महल की सब बातों को पहचान जाएगा।

Nijanand App

ए सुध जो ले आये, रूह अल्ला चौथे आसमान ।
तिन सेती प्रापत भई, त्रिगुण सृष्ट पहिचान ॥२७॥

मेरे परमधाम और मेरे स्वरूप की पहचान श्यामा महारानी चौथे आसमान परमधाम से लेकर आए हैं। उनके लाए हुए तारतम ज्ञान के द्वारा ही त्रैगुण (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) के क्षर रूपी ब्रह्मांड, क्षर से परे अक्षर और अक्षर से भी परे अक्षरातीत और उनके धाम की पहचान हुई ।

तीन सरूप की बीतक, जनम से लेकर ।
सो कहों आगे सैयनों, ए चरचा सब ऊपर ॥२८॥

अब इस तीसरे ब्रह्मांड में विजयाभिनंद बुद्ध निष्कलंक अवतार आखरूल जमां ईमाम मेहेंदी का जो आना लिखा है । उसमें मेरे ही तीन स्वरूपों की हकीकत है जो इस ग्रन्थ की शुरूआत में लिखा है - ''अथ तीन सरूपों की बीतक'' जिसको कुरान की शुरूआत में ''अलफ लाम मीम'' लिखा है यह पहले पारे का नाम है वह मेरे ही तीन सरूपों का भेद है और लिखा भी है जो इसके भेद खोलेगा वही खुद अल्लाह ताला पूर्ण ब्रह्म होगा । अब अपनी ही पहचान मैं स्वयं देता हूं जैसा कि कुरान में लिखा है - ''खुद खुदी की जो पहचान देता है वह खुद खुदा होता है ।'' अब मैं स्वयं अपने तीनों सरूपों की पहचान कराता हूं -

अलफ कहया महंमद को, रूह अल्ला ईसा-लाम ।
मीम मेहेंदी पाक से, ए तीनों एक कहे अल्ला कलाम ॥

(खुलासा प्रकरण १५, चौपाई २२)

अर्थात अरब में महंमद बन कर मैं ही आया था जिसको अलफ कहा है वह मेरा सत अंग है । रूह अल्लाह श्यामा-महारानी मेरे ही आनन्द का सरूप हैं जिनको लाम कहा है और मीम मैं स्वयं चिद्घन स्वरूप हूं और अब इन तीनों को मिलाने से ही मेरे असल स्वरूप सत्-चित, आनन्द अर्थात सच्चिदानन्द की पहचान होती है और इन तीनों सरूपों की लीला की हकीकत जिन तनों में बैठ कर की है उन तनों की जन्म से लेकर आखिर तक की हकीकत मैं अपनी आत्माओं से कहता हूं । जिनकी चर्चा सब ग्रन्थों से ऊपर है ।

जब भया बरस अग्यारमाँ, तब मन उपज्यो विचार ।
मैं कौन कहां थे आइयो, कहां मेरो भरतार ॥२९॥

तीसरे दिन की, मेरे महंमद वाले तन सत अंग की लीला की हकीकत तो जाहेर हो चुकी है । अब चौथे दिन की, मेरे आनन्द अंग श्यामा महारानी जी की हकीकत जाहेर करता हूं । जब श्यामा महारानी देवचन्द्र जी के तन में प्रगट हुए और उस तन की आयु ११ वर्ष की हुई तब मन में यह विचार आया कि मेरे इस तन का रूप तो मिथ्या है मेरा जो असल सरूप है वह कौन है ? कहां से मैं आया हूँ और मेरा भरतार (धनी) कौन है ?

Nijanand App

पूछत फिरे परदेस में, कहां है परमेस्वर ।
जिन सब को पैदा किया, सो कहां है सब ऊपर ॥३०॥

अब वहां जगह जगह पर उस परमात्मा के बारे में पूछने लगे कि जिसने इस, दुनियां को पैदा किया है, जो सबसे परे है वो परमात्मा कौन है और कहां है ?

कोऊ कहे वह घट घट, है व्यापक संसार ।
तब जान्या वह निकट, ए ही ग्रहों में सार ॥३१॥

उस परमात्मा के विषय में किसी ने कहा वो इसी संसार के ही घट-घट में है । जब सब का एक ही विचार सुना जो सब ने कहा उसी को सत्य जान लिया और समझ गए जो वस्तु सब जगह और सबके अंदर है उसको प्राप्त करना मेरे लिए कुछ कठिन काम नहीं है ।

एक देहुरा तहां रहे, तामें मूरत पिंगल स्याम ।
आगे इहां बिराजते, दै प्रदक्षणा उस ठाम ॥३२॥

उमरकोट गांव में एक पिंगल श्याम जी का मंदिर था जिसमें पिंगल श्याम जी (बांके बिहारी) की मूर्ति बिराजमान थी । यह जान कर कि मंदिर तो खास कर परमात्मा का घर होता है वहां प्रातः ही जाते और ३-३ घंटे तक परिक्रमा करते थे ।

ले लोटा घर से चले, दन्त धावन के काज ।
सुध आकार करके फिरें, आवे न मन में लाज ॥३३॥

अपने परमात्मा के दर्शन करने के लिए पिछली रात को ही उठ कर देह-क्रिया दातुन, कुल्ला और स्नान के लिए लोटा लेकर गांव से बाहर कुंए पर जाते थे । स्नान आदि से निवृत्त हो कर मंदिर जाते हुए किसी प्रकार की लोक-लाज-मान वह नहीं लेते थे ।

नित्य इत प्रदक्षणा, देवें एक पोहोर ।
फेर दण्डवत करके, मेहनत करें अति जोर ॥३४॥

उस बांके बिहारी की मूर्ति को ही परमात्मा का रूप मान कर ३-३ घण्टे दण्डवत् परिक्रमा करते जो अति कठिन कार्य था । इतना करने पर भी उस भगवान ने प्रणाम का उत्तर नहीं दिया ।

उस देस में साध सन्त, आवत नाहीं कोइ ।
जल कसनी देख के, काहू न आवन होइ ॥३५॥

तब मन में विचार आया कि किसी महान संत की शरण बिना सत्संग प्राप्त नहीं होगा और सत्संग बिना ज्ञान का विवेक प्राप्त नहीं हो सकता परन्तु रेती की भूमि होने के कारण जल की बड़ी कठिनाई थी । जिसके अभाव के कारण कोई संत वहां आते नहीं थे ।

Nijanand App

एक बेर मत्तू मेहता संग, आए हते कच्छ देस ।
तहां देहुरे साध बहुत, देखे बीच विदेस ॥३६॥

चार वर्ष तक बांके बिहारी की मूर्ति की परिकरमा करते रहे पर कुछ प्राप्त नहीं हुआ तब एक दिन पिता श्री मत्तू मेहता जी ने सोचा कि देवचन्द्र अब जवान हो रहे हैं, इनको कमाने का कार्य भार सौंपना चाहिए । यह विचार करके कच्छ देश के भोजनगर, जहां वह ऊंट व घोड़ों का व्यापार करते थे, वहां देवचन्द्र जी को भी साथ ले आए । देवचन्द्र जी ने वहां देखा कि यहां तो गली-गली में मंदिर है और हर मंदिर में कोई न कोई संत कथा कर रहा है । उनको केवल २-३ दिन का ही समय मिला । अधिक सत्संग कर विवेक प्राप्त नहीं कर सके ।

बात तब की मन में रहे, मैं जाऊं कच्छ में ।
तहां जाय के खोज करों, पाऊं परमेस्वर तिन से ॥३७॥

अब पिता श्री तो २-३ दिन में ही अपने व्यापार का कार्य करके देवचन्द्र जी को साथ ले कर उमरकोट गांव वापस लौट गए । वहां देवचन्द्र जी का मन नहीं लगता क्योंकि सत्संग मिलता ही नहीं था इसलिए कच्छ जाने के लिए बात मन में आ गई थी कि वहां ही किसी महान संत के सत्संग से ही परमात्मा की प्राप्ति हो सकेगी ।

घर में खटपट रहे, मन में रहे वैराग ।
दुनी से वैर रहे, उन्हें देखे लगे आग ॥३८॥

इसलिए घर में मन नहीं लगता था और माता-पिता से प्रायः खट-पट होती रहती थी क्योंकि दुनियां से वैर और परमात्मा से प्रेम का मार्ग ही हृदय में बैठ चुका था । इसलिए सांसारिक सगे-सम्बन्धी और घर-द्वार अग्नि के समान लगते थे ।

दै सिखापन बहुतक, कर कर थके सब कोय ।
ए फिराए ज्यों फिरे, कहे समझावें सोय ॥३९॥

देवचन्द्र जी का बालपन में ही ऐसा स्वभाव देख कर माता-पिता तथा सगे सम्बन्धियों ने बहुत समझाया पर देवचन्द्र जी पर किसी का असर नहीं हुआ । एक परमात्मा को पाने का लक्ष्य ही उनके मन में जाग्रत हो चुका था ।

श्री देवचन्द्र जी के मन में, जाऊं कहूं विदेस ।
तहां जाय के खोज करों, कोई मोहे दे उपदेस ॥४०॥

इसलिए देवचन्द्र जी ने मन में निश्चय कर लिया कि जहां सगे-सम्बन्धी हैं वहां कभी भी परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकेगी । घर से चले जाने पर ही किसी महान संत के उपदेश से ही खोज करने पर परमात्मा की प्राप्ति होगी ।

Nijanand App

पूछत फिरे सब टौरों, कोई मुझे बतावे राह ।
या समय राजा उमरकोट का, ताको बजीर जाय ताह ॥४१॥

उमरकोट गांव ऐसे मारवाड़ देश में था कि जहां से कच्छ देश तक जाने के लिए कोई साथी भी नहीं मिलता था और न ही कोई साधन या आने जाने का रास्ता था । उमरकोट के राजा के लड़के की शादी के लिए वजीर ने बारात ले कर कच्छ जाना था । यह सूचना मिलने पर देवचंद्र जी वजीर के घर गए ।

खांड़ा विवाहने को, जाता था कच्छ में ।
दो सै असवार एक बहल, उतावले पहुंचने ॥४२॥

देवचंद्र जी ने जब यह सुना कि राजकुमार का खांडा विवाहने (शादी के लिए) २०० घुड़सवार और रथ लेकर वजीर को जाना है तब उसके घर गए ।

श्री देवचन्द्र जी नें सुनी, गए पूछने तिन के ।
तिन बजीर ने बातें करीं, हम कच्छ जायेंगे ॥४३॥

वजीर से जाकर पूछने पर उसने उत्तर दिया कि जो आपने सुना है वह सत्य है तो देवचन्द्र जी ने कहा कि मुझे भी कच्छ जाना है । केवल साथ जाना चाहता हूं ।

तब पूछा उन्होंने, क्या असवारी तुम्हारे ।
हम संग क्यों पहुंचोगे, प्यादे असवारों के ॥४४॥

तब वजीर ने पूछा - क्या तुम्हारे पास कोई सवारी है ? बिना किसी सवारी के साधन के तुम हमारे साथ पैदल कैसे पहुंचोगे?

तब कह्या श्री देवचन्द्र जी, हम चले आवेंगे ।
तब उनने बरजे, जिन आओ संग हमारे ॥४५॥

यह सुनकर देवचन्द्र जी ने उत्तर दिया कि मैं तुम्हारे पीछे-२ भागा चला आऊंगा । यह सुनकर वजीर ने मना किया कि सावचेत ! हम आपको साथ नहीं ले जाएंगे ।

तब श्री देवचन्द्रजी विचारिया, मैं काहे पूछों इन्हें ।
पीछे चला जाऊंगा, अपने पांवों से ॥४६॥

तब श्री देवचन्द्र जी ने मन में विचार किया कि मुझे इनसे पूछने की कोई आवश्यकता नहीं है । मैं बारात के पीछे-पीछे ही भागता चला जाऊंगा ।

Nijanand App

घरों जाय के साज को, राह की लेने लगे ।
थारी कटोरा लोहंडा, और लोटा जल के ॥४७॥

घर में जाकर रास्ते के लिए जिन-जिन चीजों की आवश्यकता मन में आती गई, इकट्ठा करने लगे। जैसे-जल के लिए लोटा, भोजन के लिए थाली, कटोरा, लुहाण्डी (कढ़ाई) इत्यादि सब इकट्ठे कर लिए।

एक नीमचा कमर को, और कपड़े पहनन के ।
बकुचा बांध तैयार भये, खरची बांधी तिन में ॥४८॥

तेज दौड़ने के लिए, कहीं मैं थक न जाऊं, उसके लिए नीमचा (कमर का कपड़ा) भी रख लिया और जो पहनने के कपड़े थे वो भी ले लिए और उसमें खर्चे के लिए पैसे भी रख लिए। फिर सोचा कि अगर रास्ते में कोई डाकू मिल गया तो उससे बचने के लिए कटारी (तलवार) भी रख ली।

ले प्रसाद पौढ़ रहे, पीछला दिन रह्या घड़ी चार ।
वे साथ असवार भये, ए करने लगे विचार ॥४९॥

जिस दिन बारात को जाना था। उस दिन प्रातः ही भोजन करके विश्राम करने लगे और सांयकाल जब चार घड़ी दिन बाकी था। तब बारात निकलने की आवाज सुनी और आप चलने को जैसे ही तैयार हुए तो क्या देखते हैं कि -

कमर बांधते बांधते, कछू ढील हो गई इत ।
वे असवार रिंग गये, ए पीछे चले जाये तित ॥५०॥

मुख्य द्वार पर माता-पिता पलंग पर बैठे कुछ वार्ता कर रहे थे। इस वास्ते कुछ देरी हो गई। इस बीच में वजीर अपने सवारों को लेकर चले गए। जब देवचन्द्र जी बाहर आए तो पता चला कि बारात तो चली गई तो ये वैसे ही उनके पीछे भागने लगे।

चले अति उतावले, मन में पहुंचौं धाय ।
वे असवार ये प्यादे, क्यों कर पहुंच्यो जाय ॥५१॥

मन में एक ही लगन थी कि मैं अति तेज दौड़कर उनको पकड़ लूंगा पर हे प्यारे सुंदरसाथ जी! ये पैदल थे, भला सवारों के साथ कैसे पहुंच सकते थे।

यों करते चले गये, बीच पड़ी आए रात ।
ए मुलक रेतीय का, ए किन सों करें बात ॥५२॥

अडिग विश्वास और अटल निश्चय होने के कारण भागते तो चले गए पर सवारों के साथ नहीं मिल सके। इतने में रात हो गई तब रेती का मुल्क होने के कारण कोई भी प्राणी नजर नहीं आता था तो किससे कच्छ जाने का मार्ग पूछते ?

Nijanand App

तहां चली राह न पाइये, भय चोरन का जोर ।
एक दोय निबाह न सकें, है इन भांत का ठौर ॥५३॥

इतना कठिन और कटोर चोरों वाला भयानक डरावना मार्ग होने के कारण से एक-दो का भी साथ थोड़ा था, वह ऐसा रास्ता था तो अकेले की वहां क्या शक्ति थी ?

एक ढेर वाउ उठाए, खड़ा करे तरफ और ।
फेर तहां वाउ लगे, ढेर लगे और ठौर ॥५४॥

और रेती के उस देश में ऐसी जोर की आंधियां भी चलती थी कि आंधी द्वारा रेत के ढेर इधर से उधर लग जाते थे और फिर दोबारा आंधी की हवा से वही ढेर उधर से इधर हो जाता था । जिससे रास्ते का पता नहीं चलता था ।

वय बालक मन दहसत, पेट में उठा दरद ।
ना जाने आगे पीछे, है कौन जागा सरहद ॥५५॥

एक तो सोलह वर्ष की बाल्यावस्था, दूसरा चोरों की मन में दहशत, तीसरा भागते-२ पेट में भी दर्द हो चुका था । आगे-पीछे देखने पर सीमा का भी अनुमान नहीं लगता था ।

यों करते चले जाते, एक सख्स दिया दीदार ।
तब बड़ी दहसत भई, ऐसो आयो विचार ॥५६॥

पर ऐसी दशा में भी भागते ही चले जा रहे थे कि सामने से आता हुआ एक पुरूष दिखाई दिया । उसको देखकर मन में बड़ी दहशत आ गई और अनेकों प्रकार के विचार आने लगे ।

ए चोर मोको मारेगा, नहीं बचने का ठौर ।
मेरा कछु न चलहे, मुझ गई दिस और ॥५७॥

यह चोर मुझको मार डालेगा । मेरे बचने का कोई रास्ता नहीं है । इसके सामने मेरा वल नहीं चलेगा। क्या करूं? यह सोचते-२ ही बेसुध हो गए ।

इतने में आए गया, होए गई मुलाकात ।
देखत ही दहसत भई, वह कहने लगा - बात ॥५८॥

इसी सोच-विचार में ही थे कि इतने में वह पुरूष सामने आ गया । उसकी वेशभूषा देख कर डर गए और कुछ वोल न सके तो उस पुरूष ने कहा -

Nijanand App

ए भेष सिपाही का, कमर कटारी तरवार ।
मोंह दाढ़ी हाथ बरछी, ऐसो भेष ल्यावन हार ॥५९॥

देवचन्द्र जी ने देखा यह एक सिपाही का भेष था । जिसकी कमर में कटारी (तलवार) थी । मुंह पर दाढ़ी थी तथा उसका पठानों जैसा भेष था । हाथ में बरछी (भाला) थी । ऐसा उसने रूप धारण कर रखा था ।

मुख से आये वचन, कहे छोड़ो कमर तरवार ।
मुंह मूंदा दहसत से, कछू न आयो विचार ॥६०॥

उस पुरूष ने देवचंद्र जी की कटारी देख कर कड़क आवाज में कहा- ऐ लड़के ! कमर में जो कटारी है, वह मेरे हवाले करो । देवचन्द्र जी उनका डरावना रूप और कड़क आवाज को सुन कर डर गए और एक शब्द भी न बोल सके ।

तुरत तरवार छोड़ के, दई हाथ में श्री राज ।
कहा छोड़ तू गाठड़ी, ए बातें देखी इन काज ॥६१॥

इस मिथ्या जगत के तन मे स्वयं श्यामा महारानी अपने सामने खड़े मिथ्या जगत के तन में विराजमान श्री राजजी को न पहचान सकी । और यह जाना कि वह चोर हैं परन्तु वह तो स्वयं श्री राज जी महाराज थे । जब उनको तलवार सौंप दी तब उन्होंने कहा कि अपनी गठरी भी मुझे दो।

तब जान्या मुझे मारेगा, उनने कहे सुकन ।
बिछाय पिछौड़ी सुवाये, तब कांपने लगा मन ॥६२॥

कटार और गठरी ले लेने से यह निश्चय हो गया कि यह चोर ही है और अब यह मुझे मारेगा । पर मेहरबान धनी तो सदा मेहर ही करते हैं तब उस रूप में भी उन्होंने अपनी पिछौरी बिछाकर उस पर देवचन्द्र जी को लिटा दिया तब देवचन्द्र जी भयभीत होकर मौत के भय से कांपने लगे ।

बरछी हाथ पकड़ के, एक साथल पर दे पाय ।
बोझ दिया सरीर का, फेर यों पूछी जाय ॥६३॥

वह धनी तो मेहरबान अन्तर्यामी थे । वह जानते थे कि देवचन्द्र जी के पेट में भागते-भागते और भय से शूल उठ रहा है उस दर्द को हटाने के लिए उन्होंने भाले के सहारे से अपना एक पांव जांघ के मूल से देकर दबाया और पूछा -

दरद भया कछू हलका, सूल पेट का था जोर ।
श्री देवचन्द्र जी उत्तर दिया, कछू रह्या और ठौर ॥६४॥

हे लड़के ! तेरे पेट में जो दर्द था वह कम हुआ या नहीं । तब देवचंद्र जी ने उत्तर दिया कि इस तरफ तो ठीक हो गया दूसरी तरफ बाकी है ।

Nijanand App

फेर दूसरी जांघ मूल में, दे पांव खड़े रहे ।
बोझ दिया सरीर का, इन सरीर पर दे ॥६५॥

तब वह पहले की भांति ही पग का बोझ देकर दूसरी ओर भी खड़े हुए । पुनः उनकी दूसरी जांघ के मूल में अपना पैर रखकर खड़े हो गए तथा उनके शरीर पर अपने शरीर का बोझ डाला ।

फेर पूछा क्या खबर, सूल मिटा आकार ।
तब उठ खड़े भये श्री देवचन्द्र जी, ऐसा किया विचार ॥६६॥

और देवचन्द्र जी से पूछा अब क्या हाल है? पेट का दर्द मिटा या नहीं । देवचंद्र जी ने उत्तर दिया अब बिल्कुल ठीक हो गया हूं । तब देवचंद्र जी उठ कर खड़े हो गए और सोचने लगे ।

पिछौड़ी कमर बंधाइ के, बोझ बांधा अपनी पीठ पर ।
तब जान्या श्री देवचन्द्र जी, ए मारे नहीं क्योंए कर ॥६७॥

इतने में श्री राज जी महाराज ने अपनी पिछौरी देवचंद्र जी की कमर में बांध दी और उनकी गठरी अपने कन्धे पर उठा ली । तब देवचंद्र जी ने समझा कि ये चोर तो है क्योंकि इसने मेरी गठरी ले ली है पर मेहरबान है क्योंकि इसने मुझे मारा नहीं हैं ।

बन्दीखानें रख के, करेगा गुलाम ।
मारने से तो बचाया, अब क्या करावे काम ॥६८॥

यह अपना सेवक बनाकर अपने अधिकार में रखेगा । चलो । मरने से तो बच गए । जो काम कराएगा इसका सेवक बनकर कर लेंगे ।

मिल दोऊ इहां से चले, राह में अत जोर ।
लगे बात लौकिक पूछने, कहो कौन तुमारो ठौर ॥६९॥

अब यहां से श्री राजजी महाराज ने गठरी उठा ली और कहा - तेजी से मेरे पीछे चलते आओ और श्री देवचंद्र जी को सांसारिक बातों में उलझा दिया और पूछने लगे तुम कहां के रहने वाले हो?

नाम माता को पूछत, और कुटुम्ब परिवार ।
ताको उत्तर देत हैं, चले जाये तिन लार ॥७०॥

तुम्हारे माता-पिता जी का क्या नाम है? कुटुम्ब परिवार में कौन-कौन से सदस्य हैं । देवचंद्र जी तेजी से चलते भी जाते हैं और हर बात का उत्तर भी देते जा रहे हैं ।

Nijanand App

देवचन्द्र उत्तर दियो, रहें उमरकोट गाम ।
मत्तू मेहता जो पिता, करें सौदागरी का काम ॥७१॥

देवचन्द्र जी ने उत्तर दिया कि मैं उमरकोट गांव का रहने वाला हूं। मेरे पिता जी का नाम मत्तू मेहता है, सौदागरी का काम करते हैं और माता जी का नाम कुंवरबाई है।

फेर खबर देस की, पूछने लगे सुकन ।
कौन राजा तुम देस को, कैसो ताको चलन ॥७२॥

फिर मारवाड़ देश की जनता के रहन-सहन के बारे पूछा कि तुम्हारे राजा का क्या नाम है ? और वह जनता से कैसा व्यवहार करता है ?

कौन वजीर ताके रहे, क्योंकर चलत बेहेवार ।
कै ऐसी बातें लौकिक, एही पूछे विचार ॥७३॥

फिर पूछा तुम्हारे राजा के वजीर का क्या नाम है और वह प्रजा से कैसा व्यवहार करता है ? ऐसी कई सांसारिक बातें ही पूछते चले गए।

यों करते पूछत चले, पन्थ करते जाय ।
रात रही थोड़ी बाकी, साथ को पहुंचे धाय ॥७४॥

ऐसी सांसारिक बातें करते-करते ही सफर कटता गया। सारी रात इसी प्रकार की बातों में ही बीत गई। थोड़ी रात बाकी थी। इतने में बारात वाले लोगों ने जहां पड़ाव डाला था, वहीं राजजी महाराज देवचन्द्र जी को लेकर पहुंच गए।

उस जागा खड़े रहे, पिछौड़ी छुड़ाई कमर से ।
अपनी पीठ पर गांठड़ी, सो दई श्री देवचन्द्र जी को इन समें ॥७५॥

वहां जाकर खड़े हुए और अपनी पिछौरी देवचंद्र जी की कमर से छुड़ा ली और अपनी पीठ पर, जो देवचंद्र जी की गठरी लादी हुई थी, वो उनको सौंप दी।

दई तरवार छोड़ के, देख ए तेरो साथ ।
पीछे फिर के देखहीं, मेरा किनने पकड़ा था हाथ ॥७६॥

उनकी तलवार भी उनको सौंप दी और कहा-देखो ! क्या ये वही लोग हैं जिनके पीछे तुम कच्छ जाने के लिए भाग रहे थे? जैसे ही देवचंद्र जी उनको देखने लगे, इतने में श्री राजजी महाराज अन्तर्ध्यान हो गए। देवचन्द्र जी ने जैसे ही पीछे घूमकर देखा तो वहां कोई नहीं था। अब याद आई ओहो ! कि ये कौन था, जिसने मेरा हाथ पकड़ा था ?

Nijanand App

उहां तो कछु न देखहीं, कौन कहां गयो एह ।
ए तहकीक मेरा खावन्द, कियो विलाप याद कर तेह ॥७७॥

वहां तो कोई नहीं था तब विचार करने लगे ये कौन था और कहां चला गया ? तब पहचान हुई कि ओहो ! यही तो मेरे खाविंद थे जिनको मैं ढूंढने निकला था । तब बहुत विलाप किया पर चले जाने के बाद अब क्या बन सकता था ।

किसी ने सत्य ही तो कहा है -

"जब तक कोई सामने होता है, तो वह बुरा होता है ।
जब वो आंखों से ओझल होता है, तो वही खुदा होता है ॥"

फेर के एता विचारिया, मेरे ए तो हैं सिर पर ।
जहां कहूं मैं डार हों, ए छोड़े नहीं क्यों कर ॥७८॥

तब मन में निश्चय कर लिया कि यही मेरे धनी हैं । अब मेरे पर लाख संकट भी क्यों न आ जाए, तो भी ये एक पल के लिए भी मेरे से जुदा नहीं हो सकते और न ही मुझे छोड़ सकते हैं ।

ए तो तहकीक हुआ, धनी हैं मेरे हाजर ।
भले अब कहां जायेंगे, खोज लेऊं इन पर ॥७९॥

ये तो अब निश्चय ही हो गया कि मेरे धनी मेरे साथ हैं । भले आज अन्तर्ध्यान भी हो गए हैं पर मैं भी इनकी खोज करके ही छोड़ूंगा ।

तब सनमुख चले साथ को, आवत रोके तिन ।
कौन है कहां आवत, नाम श्री देवचन्द्र लिया इन ॥८०॥

यह निश्चय करके जैसे ही वह बारात वालों की तरफ आगे बढ़े तो पहरे पर खड़े सिपाहियों ने रोका और कहा - तुम कौन हो और कहां चले आ रहे हो ? तो देवचन्द्र जी ने उत्तर दिया - मेरा नाम देवचन्द्र है और मैं उमरकोट गांव का रहने वाला हूं ।

तब ले चले सिरदार पे, उनने पूछे सुकन ।
तुम क्यों आये हमको मिले, बड़ो अचरज भयो मन ॥८१॥

तब वह सिपाही देवचंद्र जी को पकड़ कर बारात के प्रमुख, वजीर के पास ले गए । वजीर देवचंद्र जी को देख कर अचरज करने लगे और बोले कि तुम हमारे पीछे पैदल चल कर कैसे पंहुच गए ।

Nijanand App

क्योंकर राह पाई तुम, क्यों पहुंचे असवारों संग ।
तब जवाब श्री देवचन्द्र जी दिया, आए चले जैसे वंग ॥८२॥

वजीर ने पूछा तुमको कच्छ आने का रास्ता किसने बताया और तुम पैदल सवारों के साथ कैसे पंहुच गए । तब देवचंद्र जी ने उत्तर दिया कि जैसे वायु का वेग नहीं रूकता मैं भी उसी तरह चला आया ।

तुमारे पीछे चले आये, कदमों पर धरे कदम ।
पांव अपने बल से, चले मार्ग आये हम ॥८३॥

तुम्हारे ही कदमों पर कदम रखकर मैं अपने पांव के बल से तुम्हारे पीछे-२ उसी मार्ग पर चलता चला आया ।

सबों बड़ो अचरज पाइ के, कही खोलो कमर ।
वे पुन डेरा डाण्डी पछाड़ी, कोई था आग जलावने पर ॥८४॥

देवचंद्र जी की इस बात को सुन कर सब अचरज में पड़ गए कि यह पैदल सवारों के साथ कैसे आ पहुंचा है । वह लोग भी अभी सामान इत्यादि उतार ही रहे थे और उनके भण्डारी भोजन इत्यादि के लिए चूल्हा जला रहे थे ।

तब उन कायस्थ सिरदार ने, रसोई का किया आदर ।
चाहो तो सीधा लेवो, या आओ रसोई पर ॥८५॥

तब उस कायस्थ जाति के वजीर ने देवचन्द्र जी को जाति के नाते से रसोई का आमंत्रण दिया और कहा कि या तो हमारे साथ ही भोजन कर लेना या भोजन बनाने की सामग्री हमसे ले लो ।

तब श्री देवचन्द्र जी ने, यों कर दिया जवाब ।
मैं अपने हाथों करत हों, कहूया कायस्थ तिन के बाब ॥८६॥

तब श्री देवचन्द्र जी ने उस कायस्थ वजीर को उत्तर दिया कि मैं तो अपने ही हाथ का बना भोजन करता हूं ।

तो हमारे भंडार से, सीधा लेवो तुम ।
तब श्री देवचन्द्र जी ने कहा, घर से सीधा ल्याए हम ॥८७॥

तो वजीर ने कहा कि अच्छा ! तुम भोजन की सब सामग्री हमसे ले लो तो देवचन्द्र जी ने उत्तर दिया कि भोजन बनाने की सब सामग्री और साधन मैं अपने साथ लाया हूं ।

Nijanand App

तब कायस्थ दुख पाय के, कही हमारी नहीं ए रवेस ।
हमारी न्यात का ले हम पे, हो तुम हमारे खेस ॥८८॥

इस उत्तर को सुनकर वह वजीर बहुत दुःखी हुआ और बोला कि यह कैसे हो सकता है कि तुम हमारी जाति के होकर अलग भोजन बनाओ । तुम हमारे सगे हो । हमारी तुम्हारी एक जाति है, इसलिए हमसे ही सीधा लो ।

तब सीधा तिनका लिया, करी रसोई तब ।
जा सरूप को दर्शन पायो थे, ताको रसोई अरूगायी सब ॥८९॥

तब इतना आग्रह करने पर श्री देवचन्द्र जी ने रसोई के लिए सीधा उनसे लेकर रसोई तैयार की और जिस स्वरूप का दर्शन पठान के रूप में किया था, उनको भोग लगाया ।

प्रसाद लेके पौढ़ रहे, फेर के उठे जब ।
उठके गैल चलन को, हुए तैयार सब ॥९०॥

भोग लगाने के पश्चात् प्रशाद लेकर थोड़ा विश्राम किया । पुनः जब उठे तो इतने में बारात वाले सब लोग चलने को तैयार हो गए ।

तब उन कायस्थ ने, कह्या अपने लोगों को ।
दोय ऊंट पर असवार, केते सामिल हो उन मो ॥९१॥

तब उस कायस्थ वजीर ने अपनी बारात में दो ऊंटों पर सवार लोगों से पूछा कि तुम दो ऊंटों पर कितने सवार हो ।

तब उनने उत्तर दिया, हम हैं जने चार ।
तब कह्या पांचमा एह तुम, सामिल करो असवार ॥९२॥

तब उन ऊंटों पर सवार लोगों ने कहा कि हम दो ऊंटों पर चार सवार हैं तब कायस्थ वजीर ने कहा देवचन्द्र जी को भी अपने साथ मिला लो ।

इन भांत श्री देवचंद्र जी, आये पहुंचे कच्छ मों ।
गये लोक अपने ठौर, आप लगे खोज को ॥९३॥

इस प्रकार से देवचन्द्र जी महाराज ऊंट पर सवार होकर कच्छ पंहुचे । वहां पंहुचने पर बाराती लोग तो जहां जाना था चले गए और देवचन्द्र जी यहां से अपने धनी की खोज पर निकले ।

Nijanand App

महामति कहें ए साथ जी, एह श्री देवचन्द्र जी की बीतक ।
आगे खोज करेंगे, सो बातें बुजरक ॥९४॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे प्यारे सुंदरसाथ जी ! उमरकोट से लेकर कच्छ पंहुचने तक कितना कठिन, कठोर संकटों का मार्ग होने पर भी देवचन्द्र जी अपनी अडिगता और अटल विश्वास लेकर सब संकटों को पार करते हुए कच्छ पंहुचे और अब सब धर्मों में परमात्मा की खोज करेंगे। जो बहुत ही महत्वपूर्ण प्रसंग है ।

प्रकरण-२, चौपाई-१२२

बीतक कच्छ देश की

अब कहो कच्छ देस की, पहुंचे आप आये जित ।
तहां आये खोज करी, सो बताऊं इत ॥१॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि जब श्री देवचन्द्र जी महाराज कच्छ पहुंचे तो किस प्रकार से उन्होंने सभी धर्मों में जा कर खोज की । वह वृत्तान्त हम बताते हैं ।

लगे खोज करने, बैठे देहुरे जाय ।
चरचा को उत पूछत, वे प्रतिमा को ठहराय ॥२॥

कच्छ में पंहुच कर वह एक मंदिर में गये जहां मूर्ति थी । तो उन्होंने पुजारी से पूछा कि यहां चर्चा किस समय होती है । उसने कहा कि चर्चा वहां होती है जहां साक्षात् भगवान नहीं होते ।

तहां मन माने नहीं, राह न आवे नजर ।
कोइक दिन रहे तिन में, फेर उठे खोज ऊपर ॥३॥

मूर्ति पूजा तो उन्होंने चार वर्ष करके देख ली थी और यह निर्णय ले लिया था कि मूर्ति पूजा भगवान की पहचान नहीं करा सकती । इसके बाद आगे निकले ।

आये खोजे सन्यासी, बड़े डिंभ धारी ।
आम पूजे तिन को, आवे खलक सारी ॥४॥

तो वहां सबने यही बताया कि भगवान की प्राप्ति सन्यास मत धारण किये बिना नहीं हो सकती तब वे सन्यास मत वालों के यहां गये क्योंकि आम जनता सन्यास मत को ही मानने वाली थी। वहां पंहुच कर देखा कि वहां गुरू बड़े आडम्बर वाले, डिम्बधारी ऊपर की वेशभूषा वाले थे ।

Nijanand App